कोई वैकुंठ कोई जमपुरी, कोई स्वर्ग पाताल।
रमे पांचेना मांहें पुतला, बीजा सागर आडी पाल।। २९ ।।

अपने-अपने कर्मों से कोई बैकुण्ठ, कोई यमपुरी, कोई स्वर्ग और कोई पाताल जाते हैं। यह सब पांच तत्वों के आकार में ही घूमते रहते हैं और दूसरे भवसागर से आगे नहीं जा सकते।

ए रामतनो वेपार करे, तेहेने माथे जमनो दंड।
कोइक दिन स्वर्ग सोंपी, पछे नरक ने कुंड।। ३० ।।

इस खेल में जो छल-कपट करते हैं (धन्धा करते हैं) उनको यम के दूतों की मार पड़ती है। वह कुछ दिन स्वर्ग में रहकर पीछे नरक के कुण्डों में जाकर यातना (कष्ट) सहते हैं।

तेरे लोके आण फरे, संजमपुरी सिरदार।
जे जाणे नहीं जगदीसने, ते खाय मोहोकम मार।। ३१ ।।

तेरह लोकों में बैकुण्ठ के सिरदार (मालिक) विष्णु भगवान का हुक्म चलता है। जो उनको नहीं पहचानता, उनको असह्य (सहन न हो सकने वाली) मार पड़ती है।

ए रामतनी लेव देव मेली, करे वैकुंठनों वेपार।
ए जीवोंनी मोच्छ सतलोक, कोई पार निराकार।। ३२ ।।

इस संसार में जो माया को छोड़कर बैकुण्ठ की भक्ति करते हैं, उन जीवों को बैकुण्ठ में मुक्ति मिलती है। कोई उससे पार जाते हैं तो निराकार में समा जाते हैं।

चौदलोक इंडा मधे, भोम जोजन कोट पचास।
अष्ट कुली पर्वत जोजन, लाख चौसठ वास।। ३३ ।।

चौदह लोकों के इस ब्रह्माण्ड में पचास करोड़ योजन जमीन है। इसमें आठ करोड़ योजन में पहाड़ हैं और चौसठ लाख योजन में बस्ती। बाकी सब जल है।

पांच तत्व छटी आतमां, सास्त्र सर्व मां ए मत।
ए निरमाण बांधीने, लई सुपन कीधूं सत।। ३४ ।।

पांच तत्व, छठी आत्मा है। यह सभी शास्त्रों का मत है। इसका हिसाब लगाकर स्वप्न को सत (सत्य) की तरह बता दिया। अर्थात् सपने में ब्रह्माण्ड को हिसाब में लाकर सच्चा बता दिया।

जोया ते साते सागर, अने जोया ते साते लोक।
पाताल साते जोइया, जाग्या पछी सह्नु फोक।। ३५ ।।

मैंने सातों सागरों को देखा और सातों लोकों को देखा। (सात सागर—लवण, रस, घृत, दधि, दूध, शराब का और मीठे जल का; सातों लोक—भू लोक, भुवर्लोक, स्वर्ग लोक, महर्लोक, जन लोक, तप लोक, सत लोक) सात पाताल (अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल और पाताल) को देखा। जागृत ज्ञान से जब जागृत होकर देखा तो पाया कि यह सब मिट जाने वाले हैं।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १९३ ।।

अवतारोंना प्रकरण

एह छल तां एवो हुतो, जेमां हाथ न सूझे हाथ।
द्रष्ट दीठे बंध पडे, तेमां आव्यो ते सघलो साथ।। १ ।।

यह माया का ऐसा अंधेरे (अज्ञान) का ब्रह्माण्ड था, जिसमें एक हाथ को दूसरा हाथ न सूझता था। ऐसी माया में लोग लिप्त थे। ऐसे ब्रह्माण्ड में अपने सुन्दरसाथ आए।

Nijanand App

ते माटे वालेजीए, आवीने छोडायो साथ।
बीज ल्यावी घर थकी, कीधो जोतनो प्रकास।। २ ।।

धाम-धनी ने ऐसे ब्रह्माण्ड में आकर सब सुहागिनियों को माया के बंध से छुड़ाया। परमधाम से तारतम ज्ञान (जागृत बुद्धि का ज्ञान) का बीज लाकर उनके अज्ञान को मिटाया।

ए रामत करी तम माटे, तमे जोवा आव्या जेह।
रामत जोई घर चालसूं, वातो ते करसूं एह।। ३ ।।

यह माया का खेल तुम्हारे लिए रचा (बनाया) है। जिसको तुम देखने के लिए आए हो। खेल देख कर वापस परमधाम चलेंगे। वहां जाकर यहां की सब बातें करेंगे।

हवे चौद लोक चारे गमां, में मथ्या जोई वचन।
मोहजल सागर मांहेंथी, काढ्या ते पांच रतन।। ४ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में चारों तरफ के ज्ञान को मैंने मन्थन करके देखा और इसमें से पांच रत्नों को निकाला।

पेहेलां कह्या में साथने, पांचे तणां ए नाम।
सुकदेव ने सनकादिक, महादेव भगवान।। ५ ।।

सुन्दरसाथ को इनके नाम मैंने पहले गिनाए हैं। (शुकदेव, कबीर, सनकादिक, महादेवजी और विष्णु भगवान)।

नारायण लखमी विष्णु मांहें, विष्णु थकी उतपन।
अंग समाय अंगमां, ए नहीं वासना अंन।। ६ ।।

नारायण और लक्ष्मी महा विष्णु के अन्दर हैं। महा विष्णु से इनकी उत्पत्ति है। इनके रूप एक-दूसरे में समा जाएंगे। इनकी आत्मा अलग नहीं है।

कबीर साखज पूरवा, लाव्यो ते वचन विसाल।
प्रगट पांचे ए थया, बीजा सागर आडी पाल।। ७ ।।

कबीरजी गवाही देने के लिए पार के वचन लाए। यह पांचों ही प्रकटे। इन्होंने पार का ज्ञान बताया। अन्य माया के जीव मोह सागर से आगे नहीं जा सकते।

वली एक कागल काढिया, सुकदेवजीनो सार।
हदियो ना कोहेडा, वेहदी समाचार।। ८ ।।

शुकदेवजी की वाणी के सार में से एक ग्रन्थ भागवत निकला। यह संसार के जीवों के लिए धुन्ध (कोहरा) है (नहीं समझ पाएंगे)। बेहद से आए सुन्दरसाथ के लिए पार की लीला का ज्ञान (खबर) है।

तमे रामत जोवा कारणे, इच्छा ते कीधी एह।
ते माटे सहु मापियूं, आ कह्यूं कौतक जेह।। ९ ।।

हे साथजी! तुम्हें इस माया का खेल देखने की इच्छा हुई थी। इस वास्ते मैंने इसको नापा-तोला (देखा) और देखा तो अचम्भा (हैरानी हुई) लगा कि आत्माओं ने कैसे मोह सागर को देखने की चाहना की!

Nijanand App

अमे रामत खरी तो जोई, जो अखंड करूं आवार।
बुधने सोभा दऊं, सत करी प्रगट पार।। १० ।।

हमारा खेल देखना तभी सच होगा, जब हम इसको अखण्ड कर देंगे। जागृत बुद्धि के ज्ञान की पहचान देकर हम इनको बेहद में अखण्ड करेंगे।

अवतार चौवीस विष्णुना, वैकुंठ थी आवे जाय।
ते विध सर्वे कहूं विगते, जेम सनंध सहु समझाय।। ११ ।।

बैकुण्ठ से विष्णु भगवान के चौबीस अवतार हुए। यह बैकुण्ठ से आए और बैकुण्ठ गए। उनकी सब हकीकत बताती हूं, जिससे सब कुछ समझ में आ जाएगा।

अवतार एकवीस ए मधे, ते आडो थयो कल्पांत।
बीजा त्रण जे मोटा कह्या, तेहेनी कहूं जुजवी भांत।। १२ ।।

इक्कीस अवतारों के बाद कल्पान्त हो गया। दूसरे और तीन बड़े कहे हैं, जिनकी अलग से हकीकत बताती हूं।

अवतार एक श्रीकृष्णनों, मूल मथुरा प्रगट्यो जेह।
वसुदेवने वायक कही, वैकुंठ वलियो तेह।। १३ ।।

एक अवतार श्री कृष्ण का जो मूल मथुरा में प्रकट हुआ। वसुदेव और देवकी को दर्शन देकर सब समझाकर बैकुण्ठ वापस हो गया (यह चतुर्भुज स्वरूप विष्णु का है)।

गोकुल सरूप पधारियो, तेहेने न कहिए अवतार।
ए तो आपणी अखंड लीला, तेहेनो ते कहूं विचार।। १४ ।।

इसके बाद वसुदेवजी जिस स्वरूप को लेकर (जन्म के बाद) गोकुल गए उसको अवतार नहीं कहना (क्योंकि जेल के अन्दर ही इस तन में गौलोक की सारी शक्तियां आ गई थीं)। यह तो अपनी अखण्ड की लीला है, जिसका मैं विचार करके बताती हूं।

संखेपे कहूं में समझवा, भाजवा मननी भ्रांत।
एहेनो छे विस्तार मोटो, आगल कहीस वृतांत।। १५ ।।

समझने के वास्ते मैं संक्षिप्त (थोड़े) में कहती हूं, ताकि तुम्हारे मन के संशय मिट जाएं। इसका विस्तार बहुत बड़ा है, जिसका वर्णन आगे होगा।

कल्पांत भेद आंही थकी, तमे भाजो मनना संदेह।
अवतार ते अक्रूर संगे, जई लीधी मथुरा ततखेव।। १६ ।।

कल्पान्त का भेद यहीं तक है। तुम अपने मन के संशय मिटाओ। यह अवतार अक्रूर के साथ मथुरा गया था।

विचार छे वली ए मधे, तमे सांभलो दई चित।
आसंका सहु करूं अलगी, कहूं तेह विगत।। १७ ।।

इसके बीच में एक और विचार है जिसे तुम चित्त देकर सुनो। उसकी हकीकत कहकर तुम्हारे सभी संशय दूर कर देती हूं।

Nijanand App

दिन अग्यारे भेख लीला, संग गोवालो तणी।
सात दिन गोकुल मधे, पछे चाल्या मथुरा भणी।। १८ ।।

ग्वालों के साथ ग्यारह दिन की लीला गौलोक की हुई। सात दिन गोकुल में और पीछे मथुरा की तरफ चले।

धनक भाजी हस्ती मल्ल मारी, त्यारे थया दिन चार।
कंस पछाडी वसुदेव छोडी, इहां थकी अवतार।। १९ ।।

धनुष तोड़ा। कुवलयापीड हाथी को मारा। चाणूर मुष्टिक पहलवान को मारा। पीछे कंस को मारा। वसुदेव को बन्धन से छुड़ाया। चार दिन मथुरा के हैं। अवतार की लीला अब यहां से शुरू होती है।

जुध कीधूं जरासिंधसूं, रथ आउध आव्या जिहां थकी।
कृष्ण विष्णु मय थया, वैकुंठमां विष्णु त्यारे नथी।। २० ।।

जरासिंध से युद्ध किया। शस्त्रों सहित रथ बैकुण्ठ से बुलाया। तब कृष्ण मात्र विष्णु हो गए। उस समय विष्णु बैकुण्ठ में नहीं थे।

वैकुंठथी जोत वली आवी, सिसुपाल होम्यो जेह।
मुख समानी श्रीकृष्णने, पूरी साख सुकदेवे तेह।। २१ ।।

शिशुपाल को मारा। जिसका जीव बैकुण्ठ जाकर वापस आया और विष्णु (श्री कृष्ण) के मुख में समा गया। शुकदेवजी ने इसकी साक्षी दी है।

कीधूं राज मथुरा द्वारका, वरस एक सो ने बार।
प्रभास सहु संघारीने, उघाड्या वैकुंठ द्वार।। २२ ।।

मथुरा से द्वारिका में जाकर एक सौ बारह वर्ष तक राज्य किया। यदुवंशियों का नाश करके बैकुण्ठ के दरवाजे खोले।

दिन आटला गोप हुतो, मोटी बुधनो अवतार।
लवलेस कांइक कहूं एहेनो, आगल अति विस्तार।। २३ ।।

इतने दिन तक बड़ी बुद्धि का अवतार छिपा था। उसका भी कुछ कहती हूं। विस्तार उसका आगे होगा।

कोइक काल बुध रासनी, ग्रही जोगवाई सकल।
आवी उदर मारे वास कीधो, वृध पामी पल पल।। २४ ।।

योगमाया की जागृत बुद्धि रास का ज्ञान लेकर श्री देवचन्द्रजी के तन में आई। रास लीला का सम्पूर्ण वर्णन किया। अब मेरे तन में आकर जागृत बुद्धि ने प्रवेश किया तो उसका विस्तार पल-पल में बढ़ता गया।

अंग मारे संग पामी, में दीधूं तारतम बल।
ते बल लई वैराट पसरी, ब्रह्मांड थासे निरमल।। २५ ।।

इस बुद्धि ने मेरा संग किया अर्थात् मेरे अन्दर आई, तो मैंने इसको तारतम का बल दिया। उस ताकत से सारे ब्रह्माण्ड में जागृत बुद्धि के ज्ञान का विस्तार हुआ। जिससे सारा अन्धकार मिटकर संसार निर्मल होगा।

Nijanand App

दैत कालिंगो मारीने, सनमुख करसे तत्काल।
लीला अमारी देखाडीने, टालसे जमनी जाल।। २६ ।।

कलियुग दैत्य को मारकर जागृत बुद्धि हमारे सामने लाकर खड़ा कर देगी। सीधा कर देगी। हमारी लीला दिखाकर आवागमन का चक्कर खत्म कर देगी।

आ देखो छो दैत जोरावर, व्यापी रह्यो वैराट।
काम क्रोध उनमद अहंकार, चाले आपोपणी वाट।। २७ ।।

देखो यह कलियुग रूपी दैत्य का रूप सारे ब्रह्माण्ड में व्यापक है। काम, क्रोध, मद और अहंकार में यह अपने ही रास्ते से चलता है (यह चारों इसकी शक्तियां हैं जिनका फैलाव है)।

वैराट आखो लोक चौदे, चाले आपोपणी मत।
मन माने रमे सहुए, फरीने वल्यूं असत।। २८ ।।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड (चौदह लोक) को अपनी ही बुद्धि से चलाता है (सारे संसार में कलियुग की ही बुद्धि है)। जिस कारण से सब कोई मनमाने ढंग से रहकर फिर मर जाते हैं (मिट जाते हैं)।

एणे संघारसे एक सब्दसों, वार न लागे लगार।
लोक चौदे पसरसे, ए बुध सब्दनों मार।। २९ ।।

ऐसे जोरावर (शक्तिशाली) कलियुग को एक शब्द की चोट से मार देंगे। इसमें थोड़ा भी समय नहीं लगेगा। तब इस जागृत बुद्धि का ज्ञान चौदह लोकों में फैल जाएगा।

हूं मारूं तो जो होय कांइए, न खमे लवानी डोट।
मारी बुधने एक लवे एवा, मरे ते कोटान कोट।। ३० ।।

कलियुग का कोई रूप हो तो मैं इसको मारूं। यह तो हमारे शब्द की जरा सी चोट नहीं सह सकता। हमारी जागृत बुद्धि के एक अंश मात्र से करोड़ों कलियुग नष्ट हो जाते हैं।

उठी छे वाणी अनेक आगम, एहेनो गोप छे अजवास।
वैराट आखो एक मुख बोले, बुधने प्रकास।। ३१ ।।

बहुत से लोगों ने तरह-तरह की भविष्यवाणियां की हैं, परन्तु उनका ज्ञान छिपा है। अब जागृत बुद्धि के ज्ञान से पूरा ब्रह्माण्ड एक ही आवाज़ में बोलेगा।

चालसे सहु एक चाले, बीजूं ओचरे नहीं वाक।
बोले तो जो कांई होय बाकी, चूंथी उडाड्यूं तूल आक।। ३२ ।।

सभी एक चाल से चलेंगे (धनी की पहचान कर सबका एक परमात्मा और एक धर्म हो जाएगा) और दूसरा कोई शब्द भी मुख से नहीं बोलेंगे। बोलें भी तो क्या, जब कुछ बाकी रहना ही नहीं। जैसे आक (मदार) का तूल (रूई) उड़ता फिरता है, उसी प्रकार यह ब्रह्माण्ड उड़ जाएगा।

हवे एह वचन कहूं केटला, एनो आगल थासे विस्तार।
मारे संग आवी निध पामी, ते निराकार ने पार।। ३३ ।।

अब यह वचन कितना कहूं। इनका विस्तार आगे होगा। हमारा संग होने से इस ब्रह्माण्ड को जागृत बुद्धि की शक्ति से निराकार के पार का ज्ञान मिला (हम यहां आए, यह फल ब्रह्माण्ड को मिला)।

Nijanand App

पार बुध पाम्या पछी, एहेनों मान मोटो थासे।
अछर खिण नव मूके अलगी, मारी संगते एम सुधरसे।। ३४ ।।

पार का ज्ञान प्राप्त करके इसका मान (सम्मान) बढ़ जाएगा। अक्षर एक क्षण के लिए भी इसे अलग नहीं करेगा। इस तरह से मेरी संगत से यह अखण्ड हो जाएगा।

अवतार जे नेहेकलंकनो, ते अस्व अधूरो रह्यो।
पुरख दीठो नहीं नैने, तुरीने कलंकी तो कह्यो।। ३५ ।।

अवतार जो नेहकलंक (निष्कलंक) का कहा है कि घोड़ा सवार के बिना अधूरा है, उस पर सवार होने वाले पुरुष को तो देखा नहीं। घोड़े को कलंकी कह दिया।

नोट : १. किन्हीं विद्वानों का ऐसा मत है कि धनी देवचन्द्रजी महाराज को ब्रज-रास और धाम का ही ज्ञान था। जागनी की सुध नहीं थी। इसलिए जागृत बुद्धि के (बुध) अवतार नहीं कहलाए।

सुन्दरबाईऐं देखिया, दिल के दीदों माहें।
ब्रज रास और धाम की, पर जागनी की सुध नाहें।।
यों उनहत्तर पातियां, लिखियां धाम धनी पर।
तब सैयां हम भी लिखी, पर नेक न दई खबर।।

सनन्ध प्रकरण ।। ४१ ।। चौपाई ।। १६, २२ ।।

अवतार अधूरा रहा। वह कार्य श्री प्राणनाथजी ने किया तो वह विजयाभिनन्द बुध निष्कलंक अवतार कहलाए।

नोट : २. किन्हीं विद्वानों का मत है कि संसार घोड़ा है। चार वेद इसके चार पैर हैं। जिसमें से तीन ही वेदों का ज्ञान जानने से लोग व्यास को वेदत्रयी (त्रिवेदी) कहते हैं। चौथा अथर्ववेद का ज्ञान स्वामी श्री प्राणनाथजी ने आकर खोला। इसलिए बुध निष्कलंक अवतार कहलाए।

अवतार आ बुधना पछी, हवे बीजो ते थाय केम।
विकार काढी सहु विस्वना, सहु कीधां अवतारना जेम।। ३६ ।।

इस जागृत बुद्धि के अवतार के पीछे दूसरा अवतार अब कैसे हो सकता है? उसने सारे ब्रह्माण्ड के संशय मिटा दिए और सबको अपने समान बना दिया।

अवतारथी उत्तम थया, तिहां अवतारनों सूं काम।
कीधो सरवालो सहुनो, इहां बीजो न राख्यूं नाम।। ३७ ।।

जब सब अवतारों से ही उत्तम जागृत बुद्धि के अवतार विजयाभिनन्द बुध निष्कलंक पधार गए तो अब और कोई अवतार नहीं आएगा। इन्होंने सब उलटे ज्ञान को सीधा कर दिया अर्थात् जो सत को असत में घटाते थे वह जुदा-जुदा करके बताया। एक परब्रह्म की सच्ची पहचान कराई।

पैया देखाड्या पारना, अविचल भान उदे थयो।
तिहां अगिया अवतारमां, अजवास इहां स्यो रह्यो।। ३८ ।।

इन्होंने पार का रास्ता बताया और अखण्ड ज्ञान के सूर्य के समान प्रकाश किया तो जुगनू की तरह चमकने वाले अवतारों का क्या महत्व?

Nijanand App

एणी पेरे तमे प्रीछजो, अवतार न थाय अंन।
पुरख तां पेहेलो न कह्यो, विचारी जुओ वचन।। ३९ ।।

हे साथजी! इसी तरह से समझना कि अब कोई अवतार नहीं होगा। पहले घोड़े को कल्की इसलिए कहा था कि पुरुष जाहिर नहीं हुए थे। इन वचनों को विचार कर देखो। (श्री देवचन्द्रजी और स्वामीजी)।

रखे कहेने धोखो रहे, आ जुआ कह्या अवतार।
तो ए केहेनी बुधें विष्णुने, जगवी पोहोंचाड्यो पार।। ४० ।।

किसी को धोखा न रहे इसलिए इन दोनों को कल्की और निहकलंक जुदा-जुदा करके कहा है। यह तुम विचार कर देखो। कौन सा जागृत बुद्धि का अवतार है जो विष्णु को भी जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर जागृत कर पार उतारेगा।

सुकजीए अवतार सहु कह्या, पण बुधमां रह्यो संदेह।
एहेनो चोख करी नव सक्यो, तो केम कहे लीला एह।। ४१ ।।

शुकदेवजी ने सब अवतारों का वर्णन किया, पर वह बुध अवतार का साफ वर्णन नहीं कर सके। जब इसको शुकदेवजी भी स्पष्ट नहीं कर सके तो वह इस लीला का वर्णन कैसे करते?

ए तो अछरातीतनी, लीला अमारी जेह।
पेहेले संसा सहु भाजीने, वली कहीस कांईक तेह।। ४२ ।।

यह तो अक्षरातीत और हमारी लीला है। पहले सबका संशय मिटा करके उसका कुछ वर्णन करूंगा।

वैराटनी विध कही तमने, रखे राखो मन संदेह।
अखंड गोकुल ने प्रतिबिंब, वली कही प्रीछवुं तेह।। ४३ ।।

विराट की हकीकत तुमको बताई है। अब किसी प्रकार का सन्देह मन में न रखो। अब अखण्ड गोकुल और प्रतिबिम्ब की लीला फिर से कहती हूं, उसे समझो।

अजवास अखंड अमकने, नहीं अंतराय पाव रती।
रास रमी गोकुल आव्या, प्रतिबिंब लीला इहां थकी।। ४४ ।।

हमारे पास जागृत बुद्धि का अखण्ड ज्ञान का प्रकाश है। धनी से एक मात्र भी अन्तर नहीं है। रास खेलकर गोकुल आए। यहां से प्रतिबिम्ब लीला शुरू हुई।

तारतम सूरज प्रगट्यो, सकल थयो प्रकास।
लागी सिखरो पाताल झलक्यो, फोडियो आकास।। ४५ ।।

तारतम ज्ञान का सूर्य उदय हुआ और सब बातों का भेद खुल गया। ज्ञान से शिखर और पाताल का अन्धकार मिटाकर उजाला किया। फिर क्षर ब्रह्माण्ड को फोड़कर बेहद में गया।

किरणां सघले कोलांभियो, गयो वैराटनो अग्नान।
द्रढाव चोकस लोक चौदनो, उडाड्यूं उनमान।। ४६ ।।

जागृत बुद्धि के ज्ञान की किरणें सब जगह फैल गईं। सम्पूर्ण विराट का अज्ञान मिट गया। चौदह लोकों में अटकल समाप्त कर एक अक्षरातीत परब्रह्म को ही दृढ़ता से एक परमात्मा मान लिया।

वली जोत झाली नव रहे, वचमां विना ठाम।
अखंड मांहें पसरी, देखाड्यो वृज विश्राम।। ४७ ।।

अब इस तारतम ज्ञान के सूर्य का प्रकाश बीच में कहीं रुकता नहीं। इस सूर्य की किरणें बेहद में पसर (फैल) गईं। अखण्ड ब्रज को दिखाया। ।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। २४० ।।

Nijanand App